17 फरवरी 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रात: 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 22 फरवरी (द्वितीय), 2012 (वीर नि. संवत्-2538)

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल**
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अजमेर में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ वैशाली नगर में श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, अजमेर द्वारा नवीन जिनमंदिर ऋषभायतन अध्यात्मधाम में दिनांक 30 जनवरी से 5 फरवरी 2012 तक श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के प्रतिदिन ग्रन्थाधिराज समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। जन्मकल्याणक, दीक्षाकल्याणक एवं आहारदान पर हुये आपके प्रवचन भी सराहनीय रहे। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, डॉ. शरदजी जैन, विदुषी राजकुमारी बहिन दिल्ली इत्यादि अनेक विद्वानों के भी प्रवचनों एवं सानिध्य का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, ब्र.सुकुमालजी झांझरी, पण्डित अश्विनजी नानावटी बांसवाड़ा, पण्डित रमेशजी ज्ञायक इन्दौर, पण्डित सचिनजी शास्त्री, पण्डित अंकितजी शास्त्री, पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री ध्रुवधाम आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई गई।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्री प्रकाशचंद-शशिप्रभा लुहाड़िया इन्दौर को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री धर्मचन्द सरोज गदिया अजमेर थे। कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री कमल-शशिकला बड़जात्या मुम्बई थे। महोत्सव की संपूर्ण विधि के यज्ञनायक श्री संजय-अनिता सोनी अजमेर थे।

इस अवसर पर भगवान आदिनाथ की 61 इंची पद्मासन प्रतिमा, भगवान भरत व बाहुबली की 61-61 इंची खड्गासन प्रतिमा एवं मानस्तम्भ की प्राण-प्रतिष्ठा की गई।

महोत्सव के ध्वजारोहणकर्त्ता श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर थे। प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री प्रेमचंदजी जैन महावीर टेन्ट हाउस अजमेर ने किया।

महोत्सव के विशेष आकर्षण विद्वानों द्वारा मंगल प्रवचन, इन्द्रसभा, राजसभा, अष्टदेवियों व माता की चर्चा, मंगल गीत नृत्य, सती अंजना व नल दम्यन्ति का नाटक, 1008 कलशों द्वारा प्रथम बार वेदी शुद्धि, मानवरहित विमान द्वारा पाण्डुकशिला पर पुष्पवृष्टि, विशाल पालना झूलन आदि अनेकानेक ऐतिहासिक व धार्मिक कार्यक्रम रहे। प्रतिदिन लगभग 3-4 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कमेटी के **अध्यक्ष** श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया, **कार्याध्यक्ष** श्री नरेशजी लुहाड़िया, **महामंत्री** श्री रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, **स्वागताध्यक्ष** श्री त्रिलोकचंदजी सोनी, श्री विनयचंदजी सोगानी, श्री हीराचंदजी बोहरा व श्री माणकचंदजी गदिया, **निर्देशक** श्री विजय बड़जात्या व श्री पदमचंदजी पहाड़िया, **मंत्री** श्री मनोजजी कासलीवाल, **कोषाध्यक्ष** श्री राजेन्द्रजी गदिया, **प्रमुख संयोजक** श्री प्रकाशचंदजी पाण्ड्या, **सहसंयोजक** श्री प्रवीणजी गदिया, **सामाजिक व राजनैतिक कार्यकर्त्ता** श्री पुखराजजी पहाड़िया एवं **प्रचार मंत्री** श्री

(शेष पृष्ठ 3 पर...)

वेदी एवं पाण्डुक शिला शिलान्यास संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पंचकल्याणक की तैयारियाँ बहुत उत्साहपूर्वक एवं जोर-शोर से चल रही है। इसी क्रम में दिनांक ९ फरवरी २०१२ को पंचकल्याणक कार्यक्रम स्थल भवानी निकेतन में वेदी एवं पाण्डुक शिला शिलान्यास कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा आदि विद्वत्गण उपस्थित थे।

विधि-विधान का कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित सौरभजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री, पण्डित सुमितजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित अजितजी कवटेकर आदि के सहयोग से संपन्न हुआ।

सम्पादकीय –

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

73 – पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १२१

विगत गाथा में कहा है कि जीवों को देवत्वादि की प्राप्ति में पौद्गलिक कर्म निमित्तभूत हैं, इसलिए देवत्वादि जीव का स्वभाव नहीं हैं।

प्रस्तुत गाथा में व्यवहार जीवत्व के एकांत की मान्यता का खण्डन है। मूल गाथा इसप्रकार है –

ण हि इंदियाणि जीवा काया पुण छप्पयार पण्णत्ता।
जं हवदि तेसु णाणं जीवो त्ति य तं परूवेंति।।१२१।।

(हरिगीत)

ये इन्द्रियाँ नहिं जीव हैं षट्काय भी चेतन नहीं।
है मध्य इनके चेतना वह जीव निश्चय जानना।।१२१।।

व्यवहार से कहे जाने वाले एकेन्द्रियादि तथा पृथ्वीकायादि जीवों में इन्द्रियाँ जीव नहीं हैं और पांच स्थावरकाय और एक त्रसकाय ये छहप्रकार की शास्त्रोक्त कायें भी जीव नहीं है। उनमें जो ज्ञान है, वह जीव है। ज्ञानी ऐसी प्ररूपणा करते हैं।

आचार्य श्री अमृतचन्द कहते हैं कि यह व्यवहार जीवत्व के एकांत की मान्यता का खण्डन है। (जिसे मात्र व्यवहारनय से जीव कहा जाता है, उसका वास्तव में जीवरूप से स्वीकार करना उचित नहीं है।

ये जो एकेन्द्रियादि तथा पृथ्वीकायादि 'जीव' कहे जाते हैं, वे अनादि जीव-पुद्गल का परस्पर अवगाह देखकर व्यवहारनय से 'जीव' कहे जाते हैं। निश्चयनय से उनमें स्पर्शनादि इन्द्रियाँ तथा पृथ्वी आदिकायें – जीव के लक्षण – चैतन्यस्वभाव के अभाव के कारण जीव नहीं है। उन्हीं में जो स्व-पर प्रकाशक ज्ञान है, उसे ही गुण-गुणी के अभेद की अपेक्षा जीव कहा जाता है।

कवि हीराचन्दजी उक्त कथन को काव्य में कहते हैं।

(दोहा)

इन्द्रिय जीव स्वभाव नहिं, षट्प्रकार फुनि काय।
जो इनमैं ज्ञायक लसै, सोई जीव कहाय।।६२।।

(सवैया इकतीसा)

एई एकइन्दी आदि पृथ्वी कायकादि भेद,
जीव पुद्गल सदा एक अवगाह है।
विवहारनय देखैं जीव की प्रधानता तैं,
जीवनाम पावै सबै दौनौं एक राह हैं।।
निहचै नाहिं तिनमैं कोई चेतना सुभाव,
जड़ जाति लिए एक सगरे निवाह है।
तिनहीं मैं आप–पर, पर का समान ज्ञान,
सोई जीव नाम ताकौं जानै तेई साह है।।६३।।

(दोहा)

इन्द्रिय काया विविध पद, सगरा जीव–निवास।
निहचै ग्यानसरूप है, चेतन विस्व–विलास।।६४।।

उपर्युक्त काव्यों का भावार्थ यह है कि निश्चय से, इन्द्रियाँ जीव नहीं है, छह कायें भी जीव नहीं हैं, जीव तो इनमें रहने वाला ज्ञायक स्वभावी आत्मा ही है।

इसीप्रकार इन्द्रियाँ एवं पृथ्वीकाय आदि के भेद भी निश्चय से जीव नहीं है – ये सब तो जीव के एकक्षेत्र अवगाह-व्यवहारनय से इन्हें जीव संज्ञा है, परन्तु निश्चय से इनमें चेतना नहीं है। ये सब जड़ हैं।

इस गाथा पर व्याख्यान करते हुए गुरुदेव श्रीकानजी स्वामी ने कहा है कि ''जीव को स्पर्शन आदि पाँच इन्द्रियाँ व्यवहार से कही जाती हैं, वस्तुतः इन्द्रियाँ जीव का स्वरूप नहीं हैं तथा पृथ्वीकाय, जलकाय, अग्निकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय रूप जीव की पर्यायों को अशुद्ध निश्चयनय से जीव कहा गया है; किन्तु पर्याय की योग्यता तो अंश है, वह जीव का त्रिकाली स्वरूप नहीं है, इसलिए निश्चय से वे भी जीव का स्वरूप नहीं है। एक रूप चैतन्य भाव ही जीव है।

तात्पर्य यह है कि जीव के एकेन्द्रिय आदि भेद व्यवहारनय की अपेक्षा से शरीर के सम्बन्ध से कहे जाते हैं। निश्चयनय से विचार किया जाय तो स्पर्शन आदि इन्द्रियाँ तथा पृथ्वीकाय आदि चैतन्य जीव से जुदे हैं। इन्द्रियाँ तथा शरीर जीव का स्वरूप नहीं है। एकसमय की पर्याय अशुद्ध निश्चयनय से जीव की कही हैं; परन्तु वे जीव का वास्तविक स्वरूप नहीं है। त्रिकाली ज्ञाता द्रव्य जीव का वास्तविक स्वरूप है।''

इसप्रकार उक्त कथन में जीव के स्वरूप की पहचान कराई है। अकेला शुद्ध चैतन्यभाव ही जीव है, अन्य एकेन्द्रिय पृथ्वी आदि शरीर की अवस्थायें या जीव की सयोगी अवस्थायें जीव नहीं है। ऐसा कहा है।

यहाँ कहा है कि ऐसे जीव के यथार्थ स्वरूप के बिना अज्ञानी जीव विकारी भाव करके पुनः पुनः देह धारण करके पाँच इन्द्रियों के विषयों को भोगता है, अपने अमृत स्वरूप असीम सुखद आत्मा के स्वभाव का आनन्द नहीं ले पाता। ●

गाथा – १२२

विगत गाथा में व्यवहार जीवत्व के एकांत की मान्यता का खण्डन किया। अब प्रस्तुत गाथा में जीव का लक्षण बताया जा रहा है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

जाणदि पस्सदि सव्वं इच्छदि सुक्खं बिभेदि दुक्खादो।
कुव्वदि हिदमहिदं वा भुजंदि जीवो फलं तेसिं।।१२२।।

(हरिगीत)

जिय जानता अर देखता, सुख चाहता दुःख से डरे।
भाव करता शुभ-अशुभ फल भोगता उनका अरे।।१२२।।

जीव जानता–देखता है, सुख चाहता है एवं दुःख से डरता है। हित–अहित को जानता है और उनके फल को भोगता है।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि ''चैतन्यस्वभावपने के कारण जानने–देखने की क्रिया जीव ही करता है। जहाँ जीव है, वहीं चार अरूपी अचेतन द्रव्य भी हैं; वे जिसप्रकार जानने और देखने की क्रिया के कर्त्ता नहीं है, उसी प्रकार जीव के साथ सम्बन्ध में रहे हुए कर्म–नोकर्म रूप पुद्गल भी उस क्रिया के कर्त्ता नहीं हैं।

चैतन्य के विवर्तनरूप संकल्प की उत्पत्ति जीव में होने के कारण सुख की अभिलाषा रूप क्रिया का जीव ही कर्त्ता है, अन्य नहीं है। शुभाशुभ कर्म के फल में प्राप्त इष्टानिष्ट विषय भोग क्रिया का सुख–दुःख स्वरूप स्वपरिणाम क्रिया की भाँति जीव ही कर्त्ता है, अन्य नहीं।''

कवि हीरानन्दजी इसी विषय को काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

जाने देखै सरब कौं, इच्छे सुख–दुःख–भीति।
करै सुहित अरु अहित कौं, भुंजै फल विपरीत।।६५।।

(सवैया इकतीसा)

चेतना–सुभाव जीव तातैं सब देखे जानै,
नभ आदि जैसै तैंसै पुग्गल अचेत हैं।
सुख का अभिलाषी होइ दुःख मैं उदेग जोइ,
हिताहित रूप जीव कल्पना समेत है।।
शुभाशुभ कर्मफल इष्टानिष्ट–योग–क्रिया,
ताका करतार जीव चेतना निकेत है।
एती लोकक्रिया जीव जाही समै लोकि जानै,
ताही समै लोक न्यारा सुद्धता उपेत है।।६६।।

(दोहा)

जीवक्रिया जिन जीव ने, लखी जीवमहिं सार।
तिन अजीव–किरिया तजी, पाया भव निरधार।।६७।।

उपर्युक्त पद्यों में कवि हीरानन्दजी ने कहा है कि जीव का स्वभाव जानना–देखना है, संसारावस्था में सुख–दुःख की इच्छा करना है तथा हिताहित का फल भोगना है। आकाश आदि पुद्गल की भाँति अचेतन हैं। जो दुःख से डरते हैं एवं सुख के अभिलाषी हैं, अपने हिताहित को समझते हैं, तथा शुभ–अशुभ कर्मों के फल रूप इष्टानिष्ट संयोगों को वेदते हैं, वे चेतना गुण युक्त जीव हैं। जब जीव ऐसी लोक क्रिया को लौकिक क्रिया समझे तभी लोक से न्यारा होकर शुद्धता को प्राप्त कर लेता है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि प्रथम तो जानना–देखना मात्र जीव की क्रिया है, अन्य द्रव्यों की नहीं तथा सुख चाहना और दुःख से डरना, ये संसारी जीव की क्रिया है। अजीवों को सुख दुःख होता नहीं है।

शुभ–अशुभ आचरण भी संसारी जीव का कर्तृत्व है। हिंसा–अहिंसा, पुण्य–पाप की क्रिया भी संसारी जीव की क्रिया है। अपने कार्य के फल में सुख–दुःख भी जीव भोगता है। दुःख का वेदन देह में नहीं, जीव में होता है। ऐसा समझने पर ही जीव पर से भिन्न स्वयं की पहचान करता है।

जानने–देखने की क्रिया का कर्त्ता जीव स्वयं ही है। आत्मा ज्ञान–दर्शन क्रिया से तन्मय है तथा शरीरादि की क्रिया से तन्मय नहीं है। पर का मेरे साथ कोई भी सम्बन्ध नहीं है। इसप्रकार पर से भेदज्ञान करके अन्तर्मुख स्वभाव के अवलम्बन से ही शान्ति प्राप्त होती है।

ज्ञान–क्रिया के साथ आत्मा तन्मय है। जैसे आकाश के साथ ज्ञान का कोई सम्बन्ध नहीं है, उसीप्रकार अजीव–पुद्गल के साथ भी ज्ञान का सम्बन्ध नहीं है। ज्ञान तो आत्मा के साथ एकमेक है – ऐसा समझे तो ज्ञान में पराश्रय की बुद्धि नहीं रहती।

बारह भावना में कहा है कि पुण्य–पाप आस्रव हैं तथा वह आस्रव की क्रिया मोक्षमार्ग में निमित्त नहीं है। छह द्रव्यों में एक जीव द्रव्य ही ज्ञान की क्रिया है, इससे वह ज्ञान की क्रिया के द्वारा ही जीव को अन्य समस्त द्रव्यों से जुदी पहचान कराता है।

जीव में ही सुख की इच्छा होती है। अजीवों को तो सुख एवं उसकी इच्छा होती ही नहीं है; क्योंकि सुख नाम का गुण जीव में ही होता है। जानने–देखने रूप ज्ञाता–दृष्टा स्वभाव की क्रिया का कर्त्ता जीव स्वयं है। पर के कारण जीव में जानने–देखने की क्रिया नहीं होती। निमित्तों के कारण ज्ञान नहीं होता। ज्ञाता–दृष्टा रहना जीव का स्वयं का स्वभाव है। साता ज्ञान–दर्शन क्रिया के साथ तन्मय है।''

इसप्रकार उक्त कथन का सार यह है कि ज्ञान दर्शन सुख–दुःख शुभ–अशुभ एवं हर्ष–शोक आदि क्रियाओं का कर्त्ता संसारी जीव ही है। ऐसी पहचान करके जीव–अजीव का भेदज्ञान करना ही धर्म है। ●

(पृष्ठ 1 का शेष...)

अकलेशजी जैन थे।

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के पावन अवसर पर अजमेर दि. जैन समाज द्वारा श्री पूनमंचदजी लुहाड़िया अजमेर को **'समाजरत्न'**, एवं जैनवीरधन की ओर से **'जिनधर्मप्रभावक'** की उपाधि प्रदान की गई। तत्पश्चात् प्रतिष्ठा कमेटी ने समस्त विद्वानों एवं अतिथियों का सम्मान एवं आभार व्यक्त किया।

महोत्सव में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के साथ–साथ अनेक विद्वानों ने जयपुर पंचकल्याणक का हार्दिक आमंत्रण दिया। सभी लोगों ने पंचकल्याणक में आने की भावना व्यक्त की।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। जन्म कल्याणक के अवसर पर बहुत धूमधाम से जुलूस निकाला गया। इन्द्रसभा व राजसभा का संचालन पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली ने बहुत सुन्दर ढंग से किया। **– अश्विन नानावटी**

परीक्षा सामग्री शीघ्र भेजें

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.) की शीतकालीन परीक्षा 27, 28 व 29 जनवरी 2012 को सम्पन्न हो चुकी है।

जिन परीक्षा केन्द्रों ने परीक्षा सामग्री अभी तक नहीं भेजी हो, कृपया यथाशीघ्र जयपुर कार्यालय को भिजवा देवें, ताकि परीक्षा परिणाम व प्रमाण–पत्र का कार्य समय पर सम्पन्न हो सके।

– ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक–परीक्षा विभाग)

आवश्यकता

भट्टारक यशकीर्ति उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रतापगढ (राज.) में धार्मिक व नैतिक अध्यापन हेतु प्रधानाचार्य की आवश्यकता है।

योग्यता – आवेदक जैन हो, एम.ए., बी.एड. हो, 5 वर्षों का प्रधानाचार्य का अनुभव हो।

वेतन – योग्यता एवं अनुभव के आधार पर

सेवा अवधि – अस्थाई

अन्य योग्यताएं – धार्मिक शिक्षण, कुशल वक्ता, अच्छा व्यक्तित्व व समर्पित सेवाभाव हो।

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें !

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ जयपुर के द्वितीय सेमेस्टर दिसम्बर 2011 की परीक्षायें सम्पन्न हो चुकी हैं। संबंधित जिन अभ्यर्थियों ने अभी तक उत्तर पुस्तिकायें परीक्षा बोर्ड कार्यालय जयपुर को नहीं भेजी हों, कृपया वे तत्काल भेजें, ताकि परीक्षाफल जैसा महत्वपूर्ण कार्य प्रभावित न होने पावे। **– ओ.पी.आचार्य (प्रबन्धक–परीक्षा विभाग)**

हार्दिक बधाई

श्री जयन्तीलालजी मुथा के सुपुत्र चि. विशाल का श्री जवाहरलालजी जैन की सुपुत्री सौ. दिव्या के साथ दिनांक 29 नवम्बर को शुभ विवाह संपन्न हुआ।इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/– रुपये की राशि प्रदान की गई।

जैनपथप्रदर्शक की ओर से हार्दिक बधाई।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

जिस जन्म के बाद मरण न हो, निर्वाण हो; वह जन्म ही कल्याणस्वरूप है, उसका ही महोत्सव मनाया जाता है। **– पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव**

श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट, नागपुर (रजि.) द्वारा संचालित

श्री महावीर विद्या निकेतन

(जैन अध्यात्म के प्रचार-प्रसार हेतु स्थापित महाराष्ट्र का प्रथम) केन्द्र

7वीं पास प्रतिभाशाली
बालकों के लिए स्वर्णिम अवसर !
साक्षात्कार शिविर : 13 से 16 अप्रैल 2012

प्रतिभा पात्रता
प्रथम श्रेणी में 7वीं कक्षा पास
जैनधर्म के संस्कार
पालन में अभिरुचि

★ लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा
★ इंग्लिश, सेमीइंग्लिश माध्यम से लौकिक शिक्षा
★ अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, कम्प्यूटर आदि विषयों की कोचिंग
★ व्यक्तित्व-विकास के लिए पुस्तकालय, योगा, खेलकूद, भ्रमण एवं कैंम्प का आयोजन

श्री महावीर विद्या निकेतन का धार्मिक पाठ्यक्रम

कक्षा 8 वीं (धर्मप्रवेशिका)	कक्षा 9 वीं (धर्मालंकार)	कक्षा 10 वीं (धर्मविशारद)
1. बालबोध पाठमाला, भाग 1-2-3	1. वीतराग-विज्ञान, भाग 1-2-3	1. तत्त्वज्ञान पाठमाला, भाग 1-2
2. छहढाला, ढाल 1-2-3	2. छहढाला, ढाल 4-5-6	2. द्रव्यसंग्रह
3. तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय 1-2-3-4	3. तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय -5-6-7	3. तत्त्वार्थसूत्र, अध्याय 8-9-10
4. लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका	4. धर्म के दशलक्षण	4. कुन्दकुन्द शतक
5. भक्तामर-स्तोत्र	5. रत्नकरण्ड श्रावकाचार	5. क्षत्रचूड़ामणि (स्वयं पठन)
6. आप कुछ भी कहो (स्वयं पठन)	6. राम कहानी (स्वयं पठन)	6. सत्य की खोज (स्वयं पठन)
7. कण्ठपाठ (चयनित विषय)	7. कण्ठपाठ (चयनित विषय)	7. कण्ठपाठ (चयनित विषय)

प्रवेश प्रक्रिया

कक्षा 7वीं में 60% से अधिक अंक प्राप्त विद्यार्थी, 31 मार्च 2012 तक अंक सूची की प्रतिलिपि सहित प्रवेश फार्म कार्यालय में जमा करावें एवं 13 से 16 अप्रैल 2012 तक संस्था द्वारा आयोजित साक्षात्कार शिविर में पालकों के साथ अनिवार्यरूप से उपस्थित होवें।

संपर्क सूत्र : आदिनाथ नखाते (अध्यक्ष) : 0712-2750290, अशोक जैन (मंत्री) : 2772378, 07588740963, नरेश जैन (संयोजक) : 9373100022, प्रियदर्शन जैन (उपसंयोजक) : 9881598899, डॉ. राकेश जैन शास्त्री (निर्देशक) : 9373005801, विपिन जैन शास्त्री (प्राचार्य) : 9860140111, मनीष जैन शास्त्री (अधीक्षक) : 8087216959, आदेश जैन शास्त्री (अधीक्षक) : 8446551330, सुदर्शन जैन शास्त्री (प्रबंधक) : 9403646327

पता : श्री महावीर विद्या निकेतन, नेहरूपुतला के सामने, इतवारी,
नागपुर 440002 (महा.) फोन नं. 0712-2765200, 7620939301

अधिक जानकारी हेतु Log in करें www.vidyaniketan.weebly.com

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

90 – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल पच्चीसवाँ प्रवचन

(गतांक से आगे...)

यद्यपि तत्त्वार्थ अनन्त हैं; तथापि यहाँ मोक्षमार्ग के प्रयोजन की अपेक्षा से सात या नौ ही कहे हैं। उनमें भी सामान्यापेक्षा जीव और अजीव दो और विशेष अपेक्षा आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा व मोक्ष – ये पाँच तत्त्व हैं। इनमें पुण्य और पाप को भी मिला दें तो ये सात हो जाते हैं।

जीव और अजीव में स्व-पर का भेद करने के लिये जीव-अजीव को जानना बहुत जरूरी है। मोक्ष को न पहिचाने और उसे हितरूप न जानें तो उसका उपाय क्यों करें? मोक्ष का उपाय संवर-निर्जरा हैं, उन्हें न पहिचाने तो उनरूप प्रवर्तन कैसे करें? इसीप्रकार आस्रव-बंध को न जानें तो उनके नाश का उपाय कैसे करें? इसीप्रकार पुण्य और पाप को आस्रव-बंधरूप न जाने तो उनसे बचने का उपाय भी क्यों करें, कैसे करें ? अतः इन सात या नौ प्रयोजनभूत तत्त्वों को जानना अत्यन्त आवश्यक है।

'अभिनिवेश' शब्द का अर्थ अभिप्राय होता है; अतः विपरीत-अभिनिवेश का अर्थ उल्टा अभिप्राय हुआ।

अभिप्राय शब्द का भाव स्पष्ट करते हुये पण्डितजी लिखते हैं –

''तत्त्वार्थश्रद्धान करने का अभिप्राय केवल उनका निश्चय करना मात्र ही नहीं है; वहाँ अभिप्राय ऐसा है कि जीव–अजीव को पहिचानकर अपने को तथा पर को जैसा का तैसा माने, तथा आस्रव को पहिचानकर उसे हेय माने, तथा बन्ध को पहिचानकर उसे अहित माने, तथा संवर को पहिचानकर उसे उपादेय माने, तथा निर्जरा को पहिचानकर उसे हित का कारण माने, तथा मोक्ष को पहिचानकर उसको अपना परमहित माने – ऐसा तत्त्वार्थश्रद्धान का अभिप्राय है; उससे उलटे अभिप्राय का नाम विपरीताभिनिवेश है।

सच्चा तत्त्वार्थश्रद्धान होने पर इसका अभाव होता है। इसलिये तत्त्वार्थश्रद्धान है सो विपरीताभिनिवेशरहित है – ऐसा यहाँ कहा है।[१]''

उक्त सात या नौ तत्त्वों को मात्र जानना ही नहीं है; उनके संबंध में हेय, उपादेय, ज्ञेय और ध्येय संबंधी निर्णय भी करना है।

परद्रव्य मात्र ज्ञेय (जानने योग्य) हैं, आस्रव-बंध हेय (छोड़ने योग्य) हैं, संवर-निर्जरा प्रगट करने की अपेक्षा एकदेश उपादेय (ग्रहण करने योग्य) हैं और मोक्ष परम उपादेय है, पूरी शक्ति लगाकर प्राप्त करने योग्य है तथा स्वद्रव्यरूप जीवतत्त्व परमज्ञेय और ध्येय (ध्यान करने योग्य) है।

परपदार्थों को तो मात्र जानना है, उनमें जमना-रमना नहीं है; परन्तु निजात्मा को जानना है, पहिचानना है, उसमें अपनापन स्थापित करना है, उसका ध्यान करना है, उसका ध्यान रखना है, उसी में जम जाना है, रम जाना है, समा जाना है; क्योंकि हमारा सबकुछ वही है, हम वही हैं।

पर में अपनापन उल्टा अभिप्राय है, विपरीत मान्यता है, विपरीताभि-निवेश है। रागादि को उपादेय मानना, पुण्य को धर्म समझना उल्टा अभिप्राय है, विपरीत मान्यता है। इसीप्रकार संवर-निर्जरा को कष्टदायक मानना तथा मोक्ष सुख और संसार सुख के अन्तर को नहीं समझना आस्रवादि तत्त्वों के संबंध में विपरीत अभिप्राय है, उल्टी मान्यता है।

यह मान्यता मिथ्यात्व है, अज्ञान है तथा उक्त संदर्भ में सही समझ पूर्वक श्रद्धान सम्यग्दर्शन है। इसीलिये कहा गया है कि विपरीताभिनिवेश रहित तत्त्वार्थश्रद्धान ही सम्यग्दर्शन है।

यहाँ एक प्रश्न संभव है कि जो तिर्यंच सम्यग्दृष्टि जीवादिक तत्त्वों के नाम भी नहीं जानते; उनमें तत्त्वार्थश्रद्धान लक्षण संभव नहीं है; अतः यह असंभव एवं अव्याप्ति दोष से दूषित है।

इस शंका का समाधान करते हुए पंडित टोडरमलजी लिखते हैं –

''जीव–अजीवादिक के नामादिक जानो या न जानो या अन्यथा जानो, उनका स्वरूप यथार्थ पहिचानकर श्रद्धान करने पर सम्यक्त्व होता है।

वहाँ कोई सामान्यरूप से स्वरूप को पहिचानकर श्रद्धान करता है, कोई विशेषरूप से स्वरूप को पहिचानकर श्रद्धान करता है। इसलिये जो तुच्छज्ञानी तिर्यंचादिक सम्यग्दृष्टि हैं; वे जीवादिक का नाम भी नहीं जानते, तथापि उनका सामान्यरूप से स्वरूप पहिचानकर श्रद्धान करते हैं; इसलिये उनके सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है।

जैसे कोई तिर्यंच अपना तथा औरों का नामादिक तो नहीं जानता; परन्तु आप ही में अपनत्व मानता है, औरों को पर मानता है।

उसीप्रकार तुच्छज्ञानी जीव–अजीव का नाम नहीं जानता; परन्तु जो ज्ञानादिस्वरूप आत्मा है, उसमें तो अपनत्व मानता है, और जो शरीरादि हैं, उनको पर मानता है – ऐसा श्रद्धान उसके होता है; वही जीव–अजीव का श्रद्धान है।

तथा जैसे वही तिर्यंच सुखादिक के नामादिक नहीं जानता है, तथापि सुख अवस्था को पहिचानकर उसके अर्थ आगामी दुःख के कारण को पहिचानकर उसका त्याग करना चाहता है, तथा जो दुःख का कारण बन रहा है, उसके अभाव का उपाय करता है।

उसीप्रकार तुच्छज्ञानी मोक्षादिक का नाम नहीं जानता, तथापि सर्वथा सुखरूप मोक्ष अवस्था का श्रद्धान करता हुआ

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३१८

उसके अर्थ आगामी बन्ध का कारण जो रागादिक आस्रव उसके त्यागरूप संवर करना चाहता है, तथा जो संसार दु:ख का कारण है; उसकी शुद्धभाव से निर्जरा करना चाहता है। इसप्रकार आस्रवादिक का उसके श्रद्धानहै।

इसप्रकार उसके भी सप्ततत्त्व का श्रद्धान पाया जाता है। यदि ऐसा श्रद्धान न हो तो रागादि त्यागकर शुद्धभाव करने की चाह न हो।[१]''

उक्त कथन में अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में यह समझाया गया है कि तुच्छ बुद्धि मनुष्यों और तिर्यंचों को सम्यग्दर्शन के योग्य मोक्षमार्ग में प्रयोजनभूत तत्त्वार्थों का ज्ञान हो सकता है, श्रद्धान हो सकता है और तदनुसार परिणमन भी हो सकता है।

इसलिए सम्यग्दर्शन का विपरीताभिनिवेशरहित तत्त्वार्थश्रद्धान यह लक्षण अव्याप्ति दोष से दूषित नहीं है।

इसी के साथ पण्डितजी यह भी स्पष्ट कर देते हैं कि भले ही उपयोग विषय-कषायादि में क्यों न हो, तो भी तत्त्वार्थश्रद्धान कायम रहता है; अत: सम्यग्दर्शन भी कायम रहता है; क्योंकि सम्यग्दर्शन का लक्षण तो विपरीताभिनिवेश रहित तत्त्वार्थश्रद्धान है। **ध्यान रहे श्रद्धान तो प्रतीतिरूप होता है, उपयोगरूप नहीं।**

यहाँ अव्याप्ति दोष के निराकरण में पण्डितजी ने तीन बातें उठाईं हैं – १. तिर्यंच या तुच्छबुद्धिवाले सम्यग्दृष्टियों की, २. भोग व युद्धकालवाले सम्यग्दृष्टियों की और ३. निर्विकल्प आत्मानुभववाले शुद्धोपयोगी सम्यग्दृष्टियों की।

तिर्यंच और तुच्छबुद्धिवालों की बात तो स्पष्ट की ही जा चुकी है। भोग भोगते और युद्ध करते समय भी यद्यपि तत्त्वार्थों संबंधी विकल्प नहीं रहते; पर प्रतीति कायम रहती ही है। **निर्विकल्प अनुभूति के काल में भी विकल्पों का ही निषेध है, प्रतीति का नहीं, श्रद्धान का नहीं।**

कुछ लोग कहते हैं कि सिद्ध सम्यग्दृष्टियों पर यह लक्षण घटित नहीं होता; क्योंकि उन्हें तो ऐसे विचार ही नहीं आते कि मैं परपदार्थों से भिन्न चैतन्यतत्त्व हूँ। उन्हें तत्त्वविचार के बिना स्व-पर भेदविज्ञान कैसे होता होगा ?

उनसे कहते हैं कि स्व-पर का भेदविज्ञान विचाररूप नहीं, ज्ञानरूप है; अत: सिद्धों में भेदविज्ञानरूप ज्ञान और स्व में एकत्वरूप प्रतीति – श्रद्धान होने में कोई बाधा नहीं है।

इसप्रकार सम्यग्दृष्टियों की सभी अवस्थाओं में विपरीताभिनिवेश रहित प्रतीतिरूप तत्त्वार्थश्रद्धान रहता है; इसकारण तत्त्वार्थश्रद्धान लक्षण में अव्याप्तिदोष नहीं है।

अतिव्याप्ति दोष के संदर्भ में यह कहा गया है कि मिथ्यादृष्टियों के भी तत्त्वार्थश्रद्धान पाया जाता है, इसकारण यह लक्षण अतिव्याप्ति दोष से दूषित है; क्योंकि लक्षण अपक्ष में चला गया। इसके उत्तर में कहा गया है कि मिथ्यादृष्टियों का तत्त्वार्थश्रद्धान नाममात्र का है, वह सच्चा श्रद्धान नहीं है। अत: इसमें अतिव्याप्ति दोष भी नहीं है।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३१९-३२०

सभी सम्यग्दृष्टियों को सहज संभव होने से असंभव दोष तो हो ही नहीं सकता। इसप्रकार सम्यग्दर्शन का यह लक्षण सर्वांग निर्दोष ही है।

इसके बाद पण्डितजी सम्यग्दर्शन के विभिन्न ग्रंथों में प्राप्त विभिन्न लक्षणों में परस्पर सतर्क समन्वय स्थापित करते हैं; जो इसप्रकार है –

''यहाँ प्रश्न है कि ऐसा है तो शास्त्रों में आपापर के श्रद्धान को व केवल आत्मा के श्रद्धान ही को सम्यक्त्व कहा व कार्यकारी कहा; तथा नवतत्त्व की संतति छोड़कर हमारे एक आत्मा ही होओ – ऐसा कहा, सो किसप्रकार कहा ?

समाधान – जिसके सच्चा आपापर का श्रद्धान व आत्मा का श्रद्धान हो, उसके सातों तत्त्वों का श्रद्धान होता ही होता है तथा जिसके सच्चा सात तत्त्वों का श्रद्धान हो, उसके आपापर का व आत्मा का श्रद्धान होता ही होता है – ऐसा परस्पर अविनाभावीपना जानकर आपापर के श्रद्धान को या आत्मश्रद्धान को ही सम्यक्त्व कहा है।[१]

इसलिए प्रयोजनभूत आस्रवादिक विशेषों सहित आपापर का व आत्मा का श्रद्धान करना योग्य है अथवा सातों तत्त्वार्थों के श्रद्धान से रागादिक मिटाने के अर्थ परद्रव्यों को भिन्न भाता है व अपने आत्मा ही को भाता है, उसके प्रयोजन की सिद्धि होती है; इसलिए मुख्यता से भेदविज्ञान को व आत्मज्ञान को कार्यकारी कहा है।

तथा तत्त्वार्थश्रद्धान किए बिना सर्व जानना कार्यकारी नहीं है; क्योंकि प्रयोजन तो रागादिक मिटाने का है; सो आस्रवादिक के श्रद्धान बिना यह प्रयोजन भासित नही होता; तब केवल जानने ही से मान को बढाता है; रागादिक नहीं छोड़ता, तब उसका कार्य कैसे सिद्ध होगा ?

तथा नवतत्त्व संतति का छोड़ना कहा है; सो पूर्व में नवतत्त्व के विचार से सम्यग्दर्शन हुआ, पश्चात् निर्विकल्प दशा होने के अर्थ नवतत्त्वों के भी विकल्प छोड़ने की चाह की। तथा जिसके पहले ही नवतत्त्वों का विचार नहीं है, उसको वह विकल्प छोड़ने का क्या प्रयोजन है ? अन्य अनेक विकल्प आपके पास पाये जाते हैं, उन्हीं का त्याग करो।

इसप्रकार आपापर के श्रद्धान में व आत्मश्रद्धान में साततत्त्वों के श्रद्धान की सापेक्षता पायी जाती है, इसलिए तत्त्वार्थश्रद्धान सम्यक्त्व का लक्षण है।[२]''

उक्त विश्लेषण से यह बात एकदम स्पष्ट हो जाती है कि आत्मश्रद्धान, आपापर का श्रद्धान और तत्त्वार्थश्रद्धान में कोई अन्तर नहीं है; क्योंकि सात या नौ तत्त्वार्थों के श्रद्धान में आत्मा का श्रद्धान और स्व तथा पर श्रद्धान भी आ ही जाता है। कथन में जो अन्तर दिखाई देता है, वह मतभेद नहीं, विवक्षाभेद है। **(क्रमशः)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३२४ २. वही, पृष्ठ ३२४-३२५

17 फरवरी 2012, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में -

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

अकलूज (महा.) : यहाँ वीतराग स्वाध्याय मण्डल अकलूज द्वारा दिनांक 26 जनवरी से 2 फरवरी 2012 तक श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ। चित्ताकर्षक कलात्मक लाल पाषाण में निर्मित श्री आदिनाथ दि. जिनमंदिर एवं कीर्तिस्तम्भ की रचना पूरे क्षेत्र में अद्वितीय है।

महोत्सव में पण्डित शान्तिकुमार पाटील, ब्र. जीतूभाई, ब्र. गजाबेन, ब्र. सुजाता ताई, ब्र. मंजु ताई, ब्र. वीतराग, पण्डित विक्रान्त शास्त्री, प्रो.सुरेश कोटडिया, पण्डित राजकुमार आलन्दकर, पण्डित शीतल दोशी, पण्डित सचिन संचेती इत्यादि विद्वानों के प्रवचनों एवं सानिध्य का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि पण्डित धर्मेन्द्रकुमार शास्त्री कोटा, ब्र. महेन्द्रकुमार शास्त्री अमायन, डॉ. नेमिनाथ शास्त्री बाहुबली ने पण्डित मनोजकुमार मुजफ्फरनगर, पण्डित अनिल शास्त्री 'धवल' एवं आचार्य धरसेन सिद्धान्त महाविद्यालय कोटा के छात्रों के सहयोग से तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई।

पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा इन्द्रसभा-राजसभा आदि का मराठी भाषा में किया गया संचालन विशेष रूप से सराहा गया। पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा के संयोजन में सीमंधर संगीत सरिता द्वारा प्रासंगिक भक्तिगीतों की संगीतमय प्रस्तुति की विशेष धूम रही।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य डॉ. सतीश-अजिता शाह इण्डि को प्राप्त हुआ। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री सुनिल-अमृता गांधी पुणे थे। कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री सुरेश-साधना दोशी नातेपुते एवं यज्ञनायक श्री संजय-नयना दोशी अकलूज थे।

इस अवसर पर भगवान आदिनाथ की 51 इंची श्वेत पाषाण की पद्मासन प्रतिमा, भगवान आदिनाथ एवं भगवान महावीर की धातु की 9-9 इंची प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा की गई।

महोत्सव के ध्वजारोहणकर्त्ता श्री सुनील हीराचंदजी दोशी एस.एच. दोशी परिवार, इन्दापुर-नातेपुते-अकलूज थे। प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री शरद हीराचंदजी दोशी परिवार खंडाला-बावडा ने किया।

महोत्सव के विशेष आकर्षण विद्वानों द्वारा मंगल प्रवचन, इन्द्रसभा, राजसभा, अष्टदेवियों व माता की चर्चा, मंगल गीत, नृत्य, अकलूज महिला मण्डल का जम्बू से जम्बूस्वामी का नाटक, विशाल पालना झूलन आदि अनेकानेक ऐतिहासिक व धार्मिक कार्यक्रम रहे। प्रतिदिन लगभग 4 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कमेटी के **अध्यक्ष** श्री रमेशसूरचंदजी दोशी, **कोषाध्यक्ष** श्री वीरकुमार मलूकचंदजी दोशी, **महामंत्री** श्री जवाहरलाल पवनलालजी दोशी,**निर्देशक** बा.ब्र. जीतूभाई, **प्रमुख संयोजक** बा.ब्र. वीतराग दोशी थे। प्रतिष्ठा कमेटी ने समस्त विद्वानों एवं अतिथियों का सम्मान एवं आभार व्यक्त किया।

पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने जयपुर पंचकल्याणक का हार्दिक आमंत्रण दिया। सभी लोगों ने पंचकल्याणक में आने की भावना व्यक्त की।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही । जन्म कल्याणक के अवसर पर बहुत धमधाम से जुलूस निकाला गया।

इस अवसर पर जयपुर, कारंजा एवं सोलापुर के प्रकाशनों का लगभग एक लाख रुपये का सत्साहित्य विक्रय हुआ। अन्तिम दिन इन्द्र-इन्द्राणी व राजा-रानी आदि पात्रों को जयपुर का सत्साहित्य श्री शान्तिनाथ मल्लिनाथ सोनाज परिवार द्वारा भेंट स्वरूप दिया गया। कमेटी एवं पात्रों द्वारा टोडरमल स्मारक को साहित्य प्रकाशन हेतु ढाईलाख रुपये की दानराशि प्राप्त हुई। ●

शोक समाचार

रावतभाटा (राज.) निवासी श्री इन्द्रमलजी जैन (सावला) का दिनांक 16 जनवरी को 95 वर्ष की उम्र में अत्यन्त स्वस्थ अवस्था में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो-यही भावना है।

जयपुर पंचकल्याणक का सीधा प्रसारण

जयपुर पंचकल्याणक में होने वाले प्रत्येक कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखें -

www.ustream.tv/channel/ptst अथवा www.ptst.in पर जाकर **LIVE TELECAST** पर क्लिक करें।

नोट : आपको एक हाई स्पीड इंटरनेट की जरूरत पड़ेगी।

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2012

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127